

स्ट्रॉबेरी की खेती

कृषि कुंभ (अक्टूबर, 2023),

खण्ड 03 भाग 05, पृष्ठ संख्या 66-71

किसानों के लिए लाभप्रद स्ट्रॉबेरी की खेती

अमित कुमार¹, मोहनी परमार², स्मिता अग्रवाल³
एवं एम. के. कुरील⁴1, 3, 4 बी. एम. कृषि महाविद्यालय, खंडवा,
राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्व विद्यालय, ग्वालियर (म. प्र.)
2ए. के. एस. विश्व विद्यालय, सतना (म. प्र.), भारत।

Email Id: amitkumar01220122@gmail.com

फसल का परिचय

स्ट्रॉबेरी (*फ्रेगेरिया X अन्नानास*) रोजेसी परिवार का फल है यह फल आकर्षक, सुगंधित, स्वादिष्ट एवं पौष्टिक होता है जिसमें एक विशिष्ट सुखद सुगंध एवं फल नाजुक होता है, यह विटामिन – सी और खनिजों से भरपूर फल है। इसमें लगभग 0.5 प्रतिशत पेक्टिन भी पाया जाता है, इसके फलों को ताजे रूप में खाने के साथ-साथ जैम, चटनी एवं अन्य खाद्य पदार्थ बनाने में भी उपयोग किया जाता है स्ट्रॉबेरी की खेती समशीतोष्ण, उष्णकटिबंधीय एवं उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में की जाती है। भारत में स्ट्रॉबेरी का क्षेत्रफल 0.65 हजार हेक्टेयर एवं उत्पादन 5.36 हजार मिलियन टन है भारत में हरियाणा राज्य स्ट्रॉबेरी के क्षेत्रफल एवं उत्पादन में अग्रणी है।



आवश्यक होता है। स्ट्रॉबेरी की वृद्धि एवं विकास वातावरणीय एवं मृदा के तापमान में भिन्नता से अत्यधिक प्रभावित होती है स्ट्रॉबेरी के पौधों की अच्छी वृद्धि के लिए 15 से 25 डिग्री सेल्सियस तापमान उपयुक्त माना जाता है ठंडी जलवायु में पाला गिरना स्ट्रॉबेरी की खेती के लिए प्रमुख बाधा है अधिकांश जून में आने पुष्पन वाली किस्मों के फूल -2 डिग्री सेल्सियस पर क्षतिग्रस्त हो जाते हैं।

मृदा

स्ट्रॉबेरी को विभिन्न प्रकार की मृदा में उगाया जा सकता है। परंतु हल्की मृदा सर्वोत्तम मानी जाती है, क्योंकि इसकी जड़े 15 से 20 सेंटीमीटर मृदा की परत तक ही सीमित होती है जिसके कारण भारी मृदा में पौधे का विकास कम होता है। कार्बनिक पदार्थों से भरपूर बलुई दोमट मृदा स्ट्रॉबेरी की खेती के लिए सबसे अच्छी मानी जाती है इसकी खेती के लिए 5 से 6.5 .पी. एच. मान उपयुक्त माना जाता है क्षारीय एवं सूत्रकृमि से ग्रसित मृदा में स्ट्रॉबेरी की खेती नहीं करना चाहिए।

जलवायु

स्ट्रॉबेरी को सभी प्रकार की जलवायु में उगाया जा सकता है लेकिन समशीतोष्ण जलवायु सर्वोत्तम मानी जाती है प्रकाश, तापमान और दोनों की परस्पर क्रिया का विकास, फल उत्पादन एवं गुणवत्ता पर काफी प्रभाव पड़ता है 12 घंटे या उससे कम दिन की अवधि और मध्यम तापमान स्ट्रॉबेरी में पुष्पन अवस्था के प्रारंभ में बहुत

उन्नत प्रजातियां

स्ट्रॉबेरी की खेती की जाने वाली सभी किस्में ऑक्टोप्लोइड होती है इसकी किस्में निम्न प्रकार है:

चैंडलर: स्ट्रॉबेरी की यह किस्म कैलिफोर्निया से विकसित की गई है। भारत में यह किस्म उपोष्णकटिबंधीय और उष्णकटिबंधीय जलवायु में उगाई जाती है, इसके फल मध्यम से बड़े आकार (20 से 25 ग्राम) के होते हैं, फलों में उच्च टी. एस.एस. (8.75 प्रतिशत), कुल शर्करा (5.98 प्रतिशत) और कम अम्लता (0.60 प्रतिशत) तक होती है इससे 30 से 38 मैट्रिक टन प्रति हैक्टेयर उपज प्राप्त होती है यह किस्म ग्रे मोल्ड के प्रति सहिष्णु होती है तथा लीफ स्पॉट और रेड स्टील के लिए अति संवेदनशील है ।

केमरोजा: यह कैलिफोर्निया विश्वविद्यालयद्वारा विकसित की गई है। यह चॉडलर किस्म से 7-10 दिन पूर्व ही पक जाती है। इसके फलों का आकार (22-28 ग्राम) तथा रंग चमकीला लाल होता है। फलों में टी.एस.एस.की मात्रा 8.86 प्रतिशत तथा अम्लता 0.53 प्रतिशत तक होती है। इस किस्म से एक हैक्टेयर में 20 से 30 मैट्रिक टन तक उपज प्राप्त होती है।

फेस्टिवल: यह एक कम अवधि वाली किस्म है, जिसे रोजा लिंडा और ओसो ग्रांड के क्रॉस द्वारा विकसित किया गया है। इसके फल शंकु आकार के तथा चमकीले लाल चमकदार रंग के होते हैं, फलों में टी. एस. एस. की मात्रा (9.46 प्रतिशत) एवं अम्लता (0.46 प्रतिशत) होती है, तथा फलों का आकार 20-25 ग्राम होता है। भारतीय परिस्थितियों में इस किस्म से 30 से 35 मैट्रिक टन प्रति हैक्टेयर तक उपज प्राप्त होती है ।

सेल्वा: यह स्ट्रॉबेरी की प्रकाश निष्प्रभावी किस्म है, फल मध्यम से लंबे एवं शंक्वाकार होते हैं। फलों की त्वचा का रंग गहरा लाल होता है। फलों में टी.एस.एस. 8.74 प्रतिशत तक होता है, तथा एक हैक्टेयर में 11 से 14 मैट्रिक टन तक उपज प्राप्त होती है।

स्वीट चार्ली: इस किस्म के पौधों में फलन जल्दी एवं फल मीठे होते हैं फलों का आकार दृढ़, शंक्वाकार तथा वजन 18-26 ग्राम होता है फलों का रंग नारंगी लाल होता है तथा उपज 22 से 28 मैट्रिक टन प्रति हैक्टेयर तक प्राप्त होती है।

तथा इस किस्म के पौधे एंथ्रेकनोज फल सड़न के लिए प्रतिरोधी है।

प्रवर्धन

स्ट्रॉबेरी को लैंगिक और अलैंगिक दोनो माध्यमों से प्रसारित किया जा सकता है

बीज प्रवर्धन: स्ट्रॉबेरी के बीज बहुत छोटे होते हैं और फल से निकालने के तुरंत बाद बोए जाने पर ठीक से अंकुरित नहीं होते हैं इन बीजों को कम तापमान पर एक निश्चित अवधि के लिए स्तरीकरण की आवश्यकता होती है फलों को 11 दिनों के लिए 1 डिग्री सेल्सियस पर स्तरीकृत करने से बीज जल्दी अंकुरित हो जाते हैं इसके बीजों को GA₃ और थायो यूरिया से उपचारित करने से बीजों की निष्क्रियता को तोड़ा जाता है। जिससे बीजों की अंकुरण क्षमता बढ़ जाती है।

वानस्पतिक प्रवर्धन

भारत में स्ट्रॉबेरी का वानस्पतिक प्रवर्धन रनर के द्वारा ठंडी जलवायु में किया जाता है घ मैदानी क्षेत्रों में रनर बनते हैं, परंतु उच्च तापमान और आर्द्रता के कारण कई बीमारियों से रनर को बचाना मुश्किल होता है । रनर उत्पादन के लिए स्टोबेरी को 1.2 X 1.2 से 1.8 X 1.8 मीटर की दूरी पर लगाया जाता है, रनर का उत्पादन किस्म, मृदा, जलवायु परिस्थिति एवं प्रवर्धन की विधि पर निर्भर करता है घ स्ट्रॉबेरी के एक पौधे से 7 से 95 तक रनर्स प्राप्त किए जा सकते हैं। बढ़ते मौसम के दौरान फूल की कलियों के निरंतर विकास के कारण सदाबहार किस्मों में रनर का उत्पादन कम होता है, अधिक रनर उत्पादन के लिए पुष्पक्रम को हाथ से पिंच करके हटा दिया जाना चाहिए । GA₃ 50-100 पी. पी. एम. एवं नाइट्रोजन 7 - 120 पी. पी. एम. के घोल का छिड़काव करने से भी उत्पादन को बढ़ाया जा सकता है ।

सूक्ष्म प्रवर्धन

वायरस मुक्त पौधों के बड़े पैमाने पर प्रसारण के लिए ऊतक संवर्धन विधि का उपयोग व्यापक रूप

से किया जाता है, एक शीर्ष कलिका से एक वर्ष में मिलियन या उससे अधिक पौधों का उत्पादन किया जा सकता है।

अनुशासित दूरी एवं उचित पौध संख्या:

स्ट्रॉबेरी की खेती में पौधे से पौधे एवं कतार से कतार की दूरी रोपण की विधि पर निर्भर करती है, स्ट्रॉबेरी में रोपण की विधियां निम्न हैं:

उलझी हुई पंक्ति विधि (मटेड रो):

यह सबसे सरल व कम खर्चीली विधि है, यह प्रणाली टंडी जलवायु के लिए उपयुक्त है इसमें पौधरोपण बसंत ऋतु के दौरान किया जाता है। इस प्रणाली में पौधे से पौधे की दूरी 0.45 मीटर एवं पंक्ति से पंक्ति की दूरी 0.9 मीटर रखी जाती है, मेट की चौड़ाई 0.4 से 0.45 मीटर के बीच रखी जाती है, इस विधि में सिंचाई ओवरहेड फुब्वारा विधि से करते हैं। रोपण की इस प्रणाली में प्रति इकाई क्षेत्रफल पर अधिक संख्या में पौधे लगाए जाते हैं, जिससे अधिक उपज प्राप्त होती है लेकिन पौधे अधिक सघन होते हैं अधिक सघन होने के कारण फलों के आकार एवं गुणवत्ता में गिरावट हो जाती है।

दूरी पंक्ति विधि (स्पेस रो): इस विधि में पौधे से पौधे 0.3 – 0.5 मीटर एवं पंक्ति से पंक्ति की दूरी 0.9 से 1 मीटर रखते हैं। इस प्रणाली में पौधे से पौधे की दूरी अधिक होने के कारण उपज कम हो जाती है, लेकिन फलों का आकार बढ़ने के साथ रोगों की समस्या कम देखी जाती है। स्ट्रॉबेरी में पौध संख्या कई कारकों पर निर्भर करती है जैसेरू रोपण प्रणाली, किस्म, मृदा की भौतिक स्थिति, उगाने का उद्देश्य एवं उगाने का समय इत्यादि। स्ट्रॉबेरी की उपज सकारात्मक रूप से रोपण घनत्व से संबंधित होती है, हालांकि बढ़ते घनत्व का फूलों की संख्या, फलों का आकार एवं गुणवत्ता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। मटेड रो विधि के द्वारा प्रति हैक्टेयर 24650 पौधे लगाए जा सकते हैं एवं स्पेस रो विधि द्वारा लगभग 20000 से 37000 पौधे प्रति हैक्टेयर लगाए जाते हैं।

अनुशासित खाद एवं उर्वरक

स्ट्रॉबेरी के पौधों को पोषक तत्वों की अत्यधिक आवश्यकता होती है तथा पौधों की सामान्य वृद्धि एवं फल उत्पादन के लिए जैविक और अजैविक दोनों उर्वरक की पर्याप्त मात्रा में आवश्यकता होती है उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्र में 50 टन गोबर की खाद, 100 किलोग्राम नाइट्रोजन, 70 किलोग्राम फास्फोरस एवं 150 किलोग्राम पोटैश की मात्रा प्रति हैक्टेयर देना चाहिए। पौधों को गोबर की खाद की मात्रा भूमि की तैयारी के समय तथा एक तिहाई नाइट्रोजन, फास्फोरस की पूरी मात्रा तथा पोटैश की आधी मात्रा रोपण के समय और शेष उर्वरकों को बूंद बूंद सिंचाई प्रणाली के माध्यम से 10 से 25 दिनों के अंतराल पर समान मात्रा में पौधों को देना चाहिए।

फर्टीगेशन

रोपण के उपरांत बूंद बूंद सिंचाई विधि द्वारा जल में घुलनशील उर्वरकों को पौधों में दिया जाता है जिससे पौधों की उचित वृद्धि एवं विकास हो सके तथा फलों की गुणवत्ता भी अच्छी प्राप्त हो सके

जल में घुलनशील उर्वरकों की मात्रा प्रति एकड़

समय	घुलनशील उर्वरकों की मात्रा प्रति ग्राम एकड़ प्रति दिन		
	नाइट्रोजन	फास्फोरस	पोटैश
10 अक्टूबर से 20 नवंबर	250	200	400
21 नवंबर से 20 दिसंबर	600	200	600
21 दिसंबर से 20 जनवरी	250	160	600
21 जनवरी	700	200	900

से 28 फरवरी			
1 मार्च से 31 मार्च	600	200	900

खरपतवार प्रबंधन

स्ट्रॉबेरी की खेती में खरपतवार प्रबंधन हेतु अंतराशष्यन कार्य एक महत्वपूर्ण क्रिया है। स्ट्रॉबेरी के खेतों को खरपतवारों से मुक्त रखने के लिए हाथों से निदाई के साथ-साथ मल्विंग का उपयोग भी किया जाता है। स्ट्रॉबेरी के खेतों में खरपतवारों को पूर्णतः नियंत्रित करने के लिए काली प्लास्टिक मल्व का उपयोग किया जाता है।

मल्विंग

पौधों में पुष्पन की अवस्था में मल्विंग की क्रिया करना अत्यंत आवश्यक होता है। मल्विंग के लिए 50 माइक्रोन मोटाई वाली पॉलिथीन की चादर का उपयोग करते हैं, जिससे खरपतवारों का नियंत्रण करने के साथ साथ फलों को सड़ने से बचाया जाता है। इसके अतिरिक्त मल्विंग करने से भूमि से पानी के वाष्पीकरण क्रिया को भी कम किया जाता है।

सिंचाई प्रबंधन

स्ट्रॉबेरी की सफल खेती के लिए सिंचाई एक महत्वपूर्ण कारक है, स्ट्रॉबेरी को रेतीली दोमट मृदा में उगाया जाता है। जिसके लिए सिंचाई अधिक बार परंतु कम मात्रा में पानी की आवश्यकता होती है। सक्रिय वानस्पतिक वृद्धि के लिए समय पर सिंचाई करना आवश्यक है, परंतु फल की परिपक्वता के समय सिंचाई को बंद कर देना चाहिए, क्योंकि इससे फलों की गुणवत्ता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। स्ट्रॉबेरी में सिंचाई की विभिन्न प्रणालियों का उपयोग किया जाता है, जिसमें ओवरहेड फुब्वारा विधि, कूड़ विधि, टपका विधि, सूक्ष्म फुब्वारा विधि इत्यादि द्वारा की जाती है। लेकिन ओवरहेड

फुब्वारा विधि स्ट्रॉबेरी में अधिक लोकप्रिय विधि है, भूमि की तैयारी के बाद और रोपण से पहले टपका सिंचाई प्रणाली स्थापित की जाती है, रोपण के बाद और पौधों के प्रारंभिक विकास के दौरान सूक्ष्म छिड़काव के माध्यम से सिंचाई की जाती है, जो पौधों की स्थापना और जोरदार विकास के बेहतर सूक्ष्म जलवायु प्रदान करती है। फलों की विकास के दौरान सूक्ष्म छिड़काव विधि को बूंद-बूंद प्रणाली से बदल दिया जाता है। जिससे आसानी से एक समान, समय पर सिंचाई के साथ फर्टीगेशन भी किया जा सकता है, फूल आने के दौरान सूक्ष्म छिड़काव से बचना चाहिए, क्योंकि फूल आने में बाधा आती है और फल भी सड़ जाते हैं।

परागण

स्ट्रॉबेरी की अधिकांश किस्मों में उभयलिंगी प्रकार के फूल पाए जाते हैं। अपूर्ण मादा पुष्प को पर-परागण की आवश्यकता होती है। इसके पराग-कण शुरू में भारी और चिपचिपे होते हैं, लेकिन बाद में शुष्क हो जाते हैं और हवा द्वारा एक से दूसरे स्थान पर स्थानांतरित हो जाते हैं। स्ट्रॉबेरी में मुख्य रूप से परागण मधुमक्खियों और मक्खियों के द्वारा होता है। अपूर्ण परागण के परिणामस्वरूप अनियमित और खराब आकर के फल विकसित होते हैं। प्रभावी परागण हेतु एक हैक्टियर में मधुमक्खियों के 2 छत्तों की सिफारिश की जाती है।

प्लास्टिक टनल का उपयोग

सर्दियों के दौरान पौधों की पंक्तियों को कवर करने के लिए प्लास्टिक टनल का उपयोग किया जाता है। प्लास्टिक टनल का उपयोग स्ट्रॉबेरी के लिए अत्यधिक सर्दी और पाला और तुषार से बचाने हेतु एवं फलों की परिपक्वता अवधि को तेज करने हेतु किया जाता है। अच्छी गुणवत्ता के फल जल्दी प्राप्त करने के लिए प्लास्टिक टनल एक सरल लाभदायक तकनीक है, इस विधि में लचीली पारदर्शी प्लास्टिक का आवरण सर्दियों के दौरान क्यारियों के ऊपर स्थापित किया जाता है जिसके लिए 30-40 माइक्रोन

की एक पारदर्शी प्लास्टिक का उपयोग करते हैं। सर्दियों के दौरान इन प्लास्टिक टनल को दिन के समय खोल दिया जाता है और रात में पुनः प्लास्टिक टनल से स्ट्रॉबेरी के पौधों की क्यारियों को ढक दिया जाता है।

दैहिक विकार

ऐल्बिनिज्म: यह स्ट्रॉबेरी का सबसे गंभीर विकार है जिसमें स्ट्रॉबेरी के फल धब्बेदार, सतह पर सफेद या गुलाबी रंग के हो जाते हैं और फलों का गूदा पीला हो जाता है। खराब स्वाद अधिक अम्लता और कम दृढ़ता या मुलायम फल उपभोक्ताओं द्वारा स्वीकार्य नहीं किए जाते हैं यह दैहिक विकार स्ट्रॉबेरी में उच्च सघनता पर पौधरोपण, अत्यधिक उर्वरकों का प्रयोग, उत्पादन के दौरान गर्म मौसम एवं अत्यधिक रेतीली कम पी. एच. वाली मृदा आदि कारणों के कारण होता है। स्ट्रॉबेरी में यह दैहिक विकार सफेद प्लास्टिक मल्व की तुलना में काली प्लास्टिक मल्व में अधिक होता है, इस दैहिक विकार को नियंत्रित करने के लिए उचित किस्म का चुनाव करने के साथ-साथ उचित दूरी पर पौधारोपण करें, एवं उर्वरकों का प्रयोग एक सीमित मात्रा में करें।

फैसियेशन: स्ट्रॉबेरी की खेती में फैसियेशन एक प्रमुख समस्या है, जिसमें स्ट्रॉबेरी के फल असामान्य रूप से चपटे हो जाते हैं और फलों का आकार बड़ा हो जाता है इस दैहिक विकार के कारण स्ट्रॉबेरी की उपज एवं फलों की गुणवत्ता पर विपरीत प्रभाव पड़ता है और फल मुर्गे के कलंगी के आकार के हो जाते हैं। यह दैहिक विकार प्रतिकूल वातावरणीय परिस्थिति, कीट एवं रोगों के संक्रमण, अधिक आद्रता और पाला एवं परागण के अभाव में होता है। इसके नियंत्रण के लिए उचित परागण की व्यवस्था करना चाहिए एवं स्ट्रॉबेरी के बागानो का उचित प्रबंधन किया जाना चाहिए।

प्रमुख कीट एवं बीमारियों का नियंत्रण

स्ट्रॉबेरी में कई प्रकार के रोग और कीट नुकसान पहुंचाते हैं विशेष रूप से गर्म क्षेत्रों में लाभदायक

स्ट्रॉबेरी की खेती में समस्याएं पैदा करते हैं। कुछ गंभीर रोग व कीटों का प्रबंधन निम्न प्रकार है:

पत्ती धब्बा रोग

यह रोग माइकोस्फैरेल्ला फ्रैगेरिया कवक के द्वारा होता है इसमें स्ट्रॉबेरी की पत्तियों पर छोटे गोल सफेद या भूरे रंग के धब्बे बन जाते हैं, गंभीर संक्रमण में यह रोग पौधों के बौनेपन और फलों में संक्रमण का कारण बन जाता है। इस रोग का संक्रमण सर्दी और बसंत ऋतु के दौरान भारी बारिश होने के कारण होता है। ओवरहेड फुब्बारा सिंचाई द्वारा भी यह रोग बढ़ जाता है। इस रोग को और अधिक फैलने से रोकने हेतु संक्रमित पत्तियों को इकट्ठा करके नष्ट कर दें।

अल्टरनेरिया पत्ती धब्बा रोग

स्ट्रॉबेरी में अल्टरनेरिया अल्टरनेट कवक के कारण होने वाला यह एक गंभीर रोग है, इसमें पत्तियों पर लगभग 10 मिलीमीटर व्यास के बैंगनी भूरे रंग के धब्बे दिखाई देते हैं, और पत्तियों की मध्य शिराएं, डंडल एवं स्टोलन भी गंभीर संक्रमण से संक्रमित हो जाते हैं। जिससे फलों की कलियों का बनना कम हो जाता है। इस रोग के प्रबंधन के लिए प्रभावित या संक्रमित पत्तियों नष्ट कर दें एवं 10 दिनों के अंतराल पर प्रभावित पौधों पर मैन्कोजेब (0.3 प्रतिश) कवकनाशी घोल का छिड़काव करें।

वर्टिसिलियम उखटा रोग

यह रोग वर्टिसिलियम एल्बो एट्रम के कारण होने वाला मृदा जनित रोग है। जो ठंडे मौसम में अधिक सक्रिय होता है, यह कवक जड़ों पर आक्रमण करता है। और पौधे के शीर्ष भागों तक पानी पहुंचाने की क्रिया में बाधा उत्पन्न करता है। इस रोग में तने आधारिय भाग पर आंतरिक भूरापन, पौधों में मुरझान और रनर उत्पादन में कमी आना प्रमुख लक्षण है इस रोग के नियंत्रण के लिए मृदा धूम्रण और फसल चक्र अपनाना आदर्श तरीका है।

कीट

स्ट्रॉबेरी की खेती में प्रमुख रूप से लाल मकड़ी, कटवर्म, सफेद ग्रब एवं सूत्रकृमि आदि कीट प्रमुख रूप से हानि पहुंचाते हैं। जिनके नियंत्रण के लिए डायमथोएट, डिमैटोन एवं फोरेट कीटनाशक दवा का उपयोग करना चाहिए। प्रत्येक 3 वर्ष स्ट्रॉबेरी की खेती करने के बाद खेतों को कम से कम एक वर्ष तक खाली रखने से अथवा गेहूं, मक्का, सरसों तथा दलहन फसल का फसल चक्र अपनाने से कीटों के द्वारा होने वाली हानि को कम किया जा सकता है।

फलों की तुड़ाई

स्ट्रॉबेरी में फलों की तुड़ाई एक महत्वपूर्ण कार्य है, फलों की तुड़ाई का समय जलवायु, रोपण का समय और बाजार की दूरी पर निर्भर करता है। सामान्यतौर पर स्ट्रॉबेरी के फलों की तुड़ाई उपोष्णकटिबंधीय जलवायु में जनवरी से मार्च के दौरान एवं पहाड़ी क्षेत्रों की ठंडी जलवायु में मई से जून तक की जाती है, फलों की तुड़ाई स्ट्रॉबेरी में तब की जाती है जब फल का आधे से तीन चौथाई त्वचा का रंग विकसित हो जाता है। दूर के बाजारों के लिए फलों की तुड़ाई हल्के लाल एवं पीले रंग की अवस्था में करनी चाहिए। स्ट्रॉबेरी के फलों की तुड़ाई आमतौर पर हर दूसरे या तीसरे दिन सुबह के समय की जानी चाहिए। अत्यधिक गर्मी के होने वाले नुकसान से बचने के लिए फलों को हमेशा छायादार स्थान पर रखना चाहिए।

किंग एवं परिवहन

स्ट्रॉबेरी की फलों की तुड़ाई के तुरंत बाद उन्हें ग्रेडिंग और पैकिंग हाउस में भी दिया जाता है। अच्छी गुणवत्ता के फलों को कुशनिंग सामग्री के रूप में पेपर कटिंग के साथ छिद्रित गत्ते के डिब्बों में पैक किया जाता है, और निम्न श्रेणी के फलों को टोकरियों में पैक किया जाता है। दूरस्थ वितरण के लिए फलों की तुड़ाई के 2 घंटे के भीतर ही फलों को 4 डिग्री सेल्सियस तापमान पर ठंडा किया जाता है तथा उसी तापमान पर रखा जाता है, ठंडा करने के बाद फलों को इंटीग्रेटेड बैन के माध्यम से भेज दिया जाता है।

ग्रेडिंग

तुड़ाई के बाद फलों को उनके आकार, वजन एवं रंग के अनुसार वर्गीकृत किया जाता है। ग्रेडिंग से पहले कटे हुए, रोगग्रस्त एवं सड़े हुए फलों को अलग कर दिया जाता है। आमतौर पर फलों को वजन के आधार पर ए ग्रेड (20 ग्राम), बी ग्रेड (10 से 20 ग्राम) और सी ग्रेड (10 ग्राम से कम) के रूप में वर्गीकृत किया जाता है। भारत में छंटाई, ग्रेडिंग और पैकिंग की क्रिया हाथों द्वारा ही की जाती है।

प्री – कूलिंग

स्ट्रॉबेरी के फलों को अधिक समय तक ताजा बनाए रखने के लिए या भंडारण क्षमता को बढ़ाने के लिए फलों की तुड़ाई के तुरंत बाद 3 डिग्री सेल्सियस पर पहले से ठंडा किया जाता है। गर्म मौसम के दौरान जब दिन में फलों की तुड़ाई के समय तापमान 30 डिग्री सेल्सियस से अधिक होता है। ऐसे समय में प्री-कूलिंग अत्यंत आवश्यक है।

उपज एवं भंडारण

स्ट्रॉबेरी की उपज उसकी किस्म, वायरस मुक्त रोपण सामग्री, जलवायु परिस्थितियों एवं प्रबंधन की विधि पर निर्भर करती है। स्ट्रॉबेरी के एक हैक्टेयर क्षेत्रफल से 12 से 35 टन तक उपज प्राप्त की जा सकती है।



उत्तरी मैदानों के उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में स्ट्रॉबेरी की उपज ठंडे क्षेत्रों की तुलना में अधिक प्राप्त होती है। भंडारण के समय स्ट्रॉबेरी शीघ्र खराब होने वाला फल है इसलिए तुड़ाई के बाद स्ट्रॉबेरी के फलों का जल्दी ही विपणन किया जाना चाहिए। स्ट्रॉबेरी के फल थोड़े समय के लिए उपलब्ध होते हैं, इसलिए उनका उचित भंडारण फलों की उपलब्धता को लंबी अवधि तक बढ़ा सकता है, 2 प्रतिशत ऑक्सीजन, 5 प्रतिशत कार्बन डाइऑक्साइड एवं 3 डिग्री सेल्सियस तापमान नियंत्रित वायुमंडलीय भंडारण विधि के द्वारा फलों को 10 से 12 दिनों के लिए अच्छी स्थिति में संग्रहित करके रख सकते हैं।